Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ

तर्पण-विधि

(मन्त्रानुवादसहित)

सम्पादक—
म० म० विद्याधर शर्मा गौड़ वेदाचार्य
मदनमोहन शास्त्री
पाण्डेय रामनारायणदत्त शास्त्री

मूल्य बारह पैसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशक

मोतीलाल जालान

गीताप्रेस, गोरखपुर

[यह 'तर्पण-विधि' गीताप्रेससे प्रकाशित 'नित्यकर्मप्रयोग' से ही लेकर अलग छापी गयी है ।]

सं० २०१२ से २०२७ तक ७०,२५०

सं० २०३० नवाँ संस्करण १०,०००

सं० २०३१ दसवाँ संस्करण १५,०००

कुल ९५,२५०

मूल्य बारह पैसे

पता—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीहरिः ॥

तर्पण-विधि

[देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणविधि]

प्रातःकाल ब्राह्मीवेलाके पूर्व शयनसे उठकर शौचादिसे निवृत्त हो किसी नदी, सरोवर या कुएँपर ही अपनी सुविधाके अनुसार स्नान करके शुद्ध उज्ज्वल वस्त्र पहनकर पूर्वाभिमुख हो कुशासनपर बैठे। फिर तीन बार आचमन[1] करके संध्योपासना एवं नित्यहोम करनेके पश्चात् बायें और दायें हाथकी अनामिका अङ्गुलिमें 'पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ'[2]— इस मन्त्रको पढ़ते हुए पवित्री (पैंती) धारण करे। फिर हाथमें त्रिकुश, यव, अक्षत और जल लेकर निम्नाङ्कित रूपसे संकल्प पढ़े—

ॐविष्णवे नमः ३। हरिः ॐतत्सदद्यैतस्य श्रीब्रह्मणो द्वितीय-परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा (वर्मा, गुप्तः) अहं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये।

---

१. यहाँ आचमनका प्रकार बतलाया जाता है—'ॐकेशवाय नमः स्वाहा, ॐनारायणाय नमः स्वाहा, ॐमाधवाय नमः स्वाहा।' इन तीन मन्त्रोंको पढ़कर प्रत्येकसे एक-एक बार (कुल तीन बार) एक-एक माशा जल पीना चाहिये, फिर 'ॐ गोविन्दाय नमः' इस मन्त्रसे दायाँ हाथ धोकर 'ॐनमो भगवते वासुदेवाय' इस मन्त्रसे अपने ऊपर प्रदक्षिणक्रमसे जल सींचे।

२. इस मन्त्रका अर्थ इस प्रकार है—'हे पवित्र करनेवाले युगल कुशमय पवित्रको ! तुम दोनों यज्ञसे सम्बन्ध रखनेवाले हो।'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तदनन्तर एक ताँबे अथवा चाँदीके पात्रमें[1] श्वेत चन्दन, चावल, सुगन्धित पुष्प और तुलसीदल रखे, फिर उस पात्रके ऊपर एक हाथ या प्रादेशमात्र लम्बे तीन कुश रखे, जिनका अग्रभाग पूर्वकी ओर रहे। इसके बाद उस पात्रमें तर्पणके लिये जल भर दे, फिर उसमें रखे हुए तीनों कुशोंको तुलसीसहित सम्पुटाकार दायें हाथमें लेकर बायें हाथसे उसे ढँक ले और निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़ते हुए देवताओंका आवाहन करे।

ॐ विश्वेदेवास आगत शृणुता म इमꣳ हवम्। एदं बर्हि-र्निषीदत॥ (यजु० ७। ३४)

हे विश्वेदेवगण! आपलोग यहाँ पदार्पण करें, हमारे प्रेमपूर्वक किये हुए इस आवाहनको सुनें और इस कुशके आसनपर विराजमान हों।

विश्वेदेवाः शृणुतेमꣳ हं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यविष्ठ ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम्॥ (यजु० ३३। ५३)

हे विश्वेदेवगण! आपलोगोंमेंसे जो अन्तरिक्षमें हों, जो द्युलोक (स्वर्ग) के समीप हों तथा अग्निके समान जिह्वावाले एवं यजन करने योग्य हों, वे सब हमारे इस आवाहनको सुनें और इस कुशासनपर बैठकर तृप्त हों।

आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तु ते॥

---

१. तर्पणमें सोना, चाँदी, ताँबा अथवा काँसका पात्र होना चाहिये, मिट्टीका नहीं; जैसा कि पितामहका वचन है—

हैमं रौप्यमयं पात्रं ताम्रकांस्यसमुद्भवम्। पितॄणां तर्पणेपात्रंमृन्मयं तु परित्यजेत्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिनका इस तर्पणमें वेदविहित अधिकार है, वे महान् बल-वाले महाभाग विश्वेदेवगण यहाँ आवें और सावधान हो जायँ।

इस प्रकार आवाहन कर कुशका आसन दे और उन पूर्वाग्र कुशोंद्वारा दायें हाथकी समस्त अङ्गुलियोंके अग्रभाग अर्थात् देवतीर्थसे ब्रह्मादि देवताओंके लिये पूर्वोक्त पात्रमेंसे एक-एक[1] अञ्जलि चावल-मिश्रित जल लेकर दूसरे पात्रमें गिरावे और निम्नाङ्कित रूपसे उन-उन देवताओंके नाममन्त्र पढ़ता रहे—

देवतर्पण

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्र-स्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्।

---

१. देवताओंका तर्पण कुशके अग्रभागसे, मनुष्योंका मध्यभागसे और पितरोंका मूलाग्र एवं दक्षिणाग्र भागसे होना चाहिये। इसी प्रकार देवतर्पणमें पूर्वाभिमुख, मनुष्यतर्पणमें उत्तराभिमुख और पितृतर्पणमें दक्षिणाभिमुख रहना चाहिये। दक्षस्मृतिमें लिखा है—

प्रादेशमात्रमुद्धृत्य सलिलं प्राङ्मुखः सुरान्।
उदङ्मनुष्यांस्तृप्येत्तु पितॄन् दक्षिणतस्तथा॥
अग्रैस्तु तर्पयेद्देवान् मनुष्यान् कुशमध्यतः।
पितॄंस्तु कुशमूलाग्रैर्विधिः कौशो यथाक्रमम्॥

२. देवताओंको एक-एक, मनुष्योंको दो-दो और पितरोंको तीन-तीन अञ्जलि जल देना चाहिये। स्त्रियोंमें माता, पितामही और प्रपिता-महीं आदिको तीन-तीन, सौतेली माँ और आचार्य-पत्नीको दो-दो तथा अन्य सब स्त्रियोंको एक-एक अञ्जलि जल देना चाहिये। व्यासजी कहते हैं—

एकैकमञ्जलिं देवा द्वौ द्वौ तु सनकादयः।
जघ्नन्ति पितरस्त्रींस्त्रीन् स्त्रिय एकैकमञ्जलिम्॥
सांख्यायनः—मातृमुख्यास्तु यास्तिस्रस्तासां त्रींस्त्रीञ्जलाञ्जलीन्।
सपत्न्याचार्यपत्नीनां द्वौ द्वौ दद्याज्जलाञ्जली॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्।

ऋषितर्पण

इसी प्रकार निम्नाङ्कित मन्त्रवाक्योंसे मरीचि आदि ऋषियोंको भी एक-एक अञ्जलि जल दे—

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

दिव्यमनुष्यतर्पण

इसके बाद जनेऊको मालाकी भाँति गलेमें धारणकर [अर्थात् निवीती[1] हो] पूर्वोक्त कुशोंको दायें हाथकी कनिष्ठिकाके

१. देवतर्पण तथा अन्य कार्योंमें यज्ञोपवीत बायें कंधेपर रहता है, इसकी उपवीत संज्ञा है। कण्ठमें मालाकी भाँति किया हुआ यज्ञोपवीत निवीत कहलाता है—'निवीतं कण्ठलम्बनम्।' (औशनसस्मृति) दिव्य मनुष्योंके तर्पणमें यज्ञोपवीतको निवीतभावसे ही रखना चाहिये—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मूल-भागमें उत्तराग्र रखकर स्वयं उत्तराभिमुख हो निम्नाङ्कित मन्त्र-वचनोंको दो-दो बार पढ़ते हुए दिव्य मनुष्योंके लिये प्रत्येकको दो-दो अञ्जलि यवसहित जल प्राजापत्यतीर्थ (कनिष्ठिकाके मूल-भाग) से अर्पण करे—

ॐ सनकस्तृप्यताम् ॥२॥ ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् ॥२॥ ॐ सनातनस्तृप्यताम् ॥२॥ ॐ कपिलस्तृप्यताम् ॥२॥ ॐ आसुरिस्तृप्यताम् ॥२॥ ॐ वोढुस्तृप्यताम् ॥२॥ ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् ॥२॥

दिव्यपितृतर्पण

तत्पश्चात् उन कुशोंको द्विगुण-भुग्न करके उनका मूल और अग्रभाग दक्षिणकी ओर किये हुए ही उन्हें अँगूठे और तर्जनीके बीचमें रखे और स्वयं दक्षिणाभिमुख हो बायें घुटनेको पृथ्वीपर रखकर अपसव्य-भावसे (जनेऊको दायें कंधेपर रखकर) पूर्वोक्त पात्रस्थ जलमें कालातिल मिलाकर पितृतीर्थसे (अँगूठा और

निवीती हन्तकारेण मनुष्यांस्तर्पयेदथ। (वाचस्पति)

पितृकार्यमें यज्ञोपवीत दायें कंधेपर रहता है, इसको प्राचीनावीत या अपसव्य कहते हैं—

सव्यबाहुं समुद्धृत्य दक्षिणेन धृतं द्विजैः।
प्राचीनावीतमित्युक्तं पित्र्ये कर्मणि धारयेत्॥

(औशनसस्मृति)

१. तिलसहित तर्पणका माहात्म्य वायुपुराणमें यों लिखा है—

तिलदर्भैस्तु संयुक्तं श्रद्धया यत्प्रदीयते।
तत्सर्वममृतं भूत्वा पितृणामुपतिष्ठते॥

'तिल और कुशाके साथ श्रद्धासे जो कुछ दिया जाता है, वह अमृत-रूप होकर पितरोंको प्राप्त होता है।'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तर्जनीके मध्यभागसे) दिव्य पितरोंके लिये निम्नाङ्कित मन्त्र-वाक्योंको पढ़ते हुए तीन-तीन अञ्जलि जल दे। यथा—

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ॥३॥ ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ॥३॥ ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ॥३॥ ॐअग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः ॥ ३ ॥ ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः ॥ ३ ॥ ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः ॥ ३ ॥

यमतर्पण

इसी प्रकार निम्नलिखित मन्त्र-वाक्योंको पढ़ते हुए चौदह यमोंके लिये भी पितृतीर्थसे ही तीन-तीन अञ्जलि तिलसहित जल दे—

याज्ञवल्क्यने देवताओं, दिव्य मनुष्यों और पितरोंके लिये क्रमशः श्वेत, शबल और काले तिलका उपयोग बतलाया है—

शुक्लैस्तु तर्पयेद्देवान् मनुष्याञ्छबलैस्तिलैः।
पितॄंस्तु तर्पयेत्कृष्णैस्तर्पणे सर्वदा द्विजैः॥

अग्निपुराणमें जीवत्पितृक (जिसका पिता जीवित हो उस) के द्वारा तिल-तर्पणका निषेध किया है—

दर्शश्राद्धं गयाश्राद्धं तिलैस्तर्पणमेव च।
न जीवत्पितृको भूप कुर्यात् कृत्वाघमाप्नुयात्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ यमाय नमः ॥३॥ ॐधर्मराजाय नमः ॥३॥ ॐमृत्यवे नमः ॥३॥ ॐअन्तकाय नमः ॥३॥ ॐवैवस्वताय नमः ॥३॥ ॐ कालाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ॥३॥ ॐ औदुम्बराय नमः ॥३॥ ॐदध्नाय नमः ॥३॥ ॐनीलाय नमः ॥३॥ ॐ परमेष्ठिने नमः ॥ ३ ॥ ॐ वृकोदराय नमः ॥३॥ ॐ चित्राय नमः ॥ ३ ॥ ॐ चित्रगुप्ताय नमः ॥ ३ ॥

मनुष्यपितृतर्पण

इसके पश्चात् निम्नाङ्कित मन्त्रसे पितरोंका आवाहन करे—

ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत आवह पितॄन्हविषे अत्तवे ॥

(यजु० १९। ७०)

हे अग्ने! तुम्हारे यजनकी कामना करते हुए हम तुम्हें स्थापित करते हैं। यजनकी ही इच्छा रखते हुए तुम्हें प्रज्वलित करते हैं। हविष्यकी इच्छा रखते हुए तुम भी तृप्तिकी कामनावाले हमारे पितरोंको हविष्य भोजन करनेके लिये बुलाओ।

आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥

(यजु० १९। ५८)

हमारे सोमपान करने योग्य अग्निष्वात्त[1] पितृगण देवताओंके साथ गमन करने योग्य मार्गोंसे यहाँ आवें और इस यज्ञमें स्वधासे तृप्त होकर हमें मानसिक उपदेश दें तथा वे हमारी रक्षा करें।

१. जिनके शरीरका अग्निने आस्वादन किया है, अर्थात् इस लोकमें मृत्युके पश्चात् जिनका शरीर दग्ध किया गया है, वे अग्निष्वात्त हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तदनन्तर अपने पितृगणों[1] का नाम-गोत्र आदि उच्चारण करते हुए प्रत्येकके लिये पूर्वोक्त विधिसे ही तीन-तीन अञ्जलि तिलसहित जल दे। यथा—

अस्मत्पिता[2] (बाप) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अस्मत्पितामहः (दादा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अस्मत्प्रपितामहः (परदादा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्र आदित्यरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं

---

१. तर्पणमें पितरोंका क्रम यों समझना चाहिये—

तातास्त्रात्रितयं सपत्नजननी मातामहादित्रयं
सत्रि स्त्रीतनयादि तातजननीस्वभ्रातरः सत्रियः।
तातास्त्वात्मभगिन्यपत्यधवयुग् जायापिता सद्गुरुः
शिष्यास्ताः पितरो महालयविधौ तीर्थे तथा तर्पणे ॥

पिता, पितामह, प्रपितामह। माता, पितामही, प्रपितामही। सौतेली माता। मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह। मातामही, प्रमातामही, वृद्धप्रमातामही। पत्नी। पुत्र (सपत्नीक एवं पुत्रसहित)। पति-पुत्रसहित पुत्री। पत्नी पुत्रादिसहित पितृव्य (चाचा)। मातुल (मामा)। स्वभ्राता तथा सौतेला भाई। पति-पुत्रादिसहित फूआ तथा मौसी। बहिन तथा सौतेली बहिन। पत्नी आदिसहित श्वसुर, सद्गुरु, शिष्य तथा आप्तपुरुष—ये सभी इसी क्रमसे महालयविधि (पितृपक्ष-श्राद्ध) तथा तीर्थश्राद्ध एवं तर्पणके पितर निश्चित किये गये हैं।

२. तर्पणमें वाक्य-योजनाके लिये अधोलिखित वचन ध्यान देने योग्य हैं—

स्मृत्यन्तरे—सम्बन्धनामगोत्रेण स्वधान्ते च नमो नमः।
वस्वादिरूपं संकीर्त्य तर्पयेत्पितृपूर्वकम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(गङ्गाजलं वा[1]) तस्मै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अस्मन्माता अमुकी देवी दा[2] अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अस्मत्पितामही (दादी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अस्मत्प्रपितामही (परदादी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अस्मत्सापत्नमाता (सौतेली मा) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ ३ ॥

इसके बाद निम्नाङ्कित नौ मन्त्रोंको पढ़ते हुए पितृतीर्थसे जल गिराता रहे—

ॐउदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥
(यजु० १९ । ४९)

वसिष्ठः—सम्बन्धमनुकीर्त्यैव नामगोत्रमनन्तरम् ।
वस्वादिरूपं संकीर्त्य स्वधाकारेण तर्पयेत् ॥
बोधायनः—शर्मान्तं ब्राह्मणस्योक्तं वर्मान्तं क्षत्रियस्य तु ।
गुप्तान्तं चैव वैश्यस्य दासान्तं शूद्रजन्मनः ॥
चतुर्णामपि वर्णानां गोत्रत्वे पितृगोत्रता ।
पितृगोत्रं कुमारीणामूढानां भर्तृगोत्रता ॥
वृद्धयाज्ञवल्क्यः—तृप्यतामिति वक्तव्यं नाम्ना तु प्रणवादिना ।
आवाह्य पूर्वकन्मन्त्रैरास्तीर्य च कुशांश्च तान् ॥

१. इसी प्रकार अन्यत्र भी 'गङ्गाजल' से तर्पण करते समय योजना कर लेनी चाहिये ।

२. गोभिलसूत्रे—स्त्रीणां दान्तं नाम ज्ञेयम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस लोकमें स्थित, परलोकमें स्थित और मध्यलोकमें स्थित सोमभागी पितृगण क्रमसे ऊर्ध्वलोकोंको प्राप्त हों। जो वायुरूपको प्राप्त हो चुके हैं, वे शत्रुहीन सत्यवेत्ता पितर आवाहन करनेपर [यहाँ उपस्थित हो] हमलोगोंकी रक्षा करें।

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयꣳ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥

(यजु० १९। ५०)

अङ्गिराके कुलमें, अथर्व मुनिके वंशमें तथा भृगुकुलमें उत्पन्न हुए नवीन गतिवाले एवं सोमपान करने योग्य जो हमारे पितर इस समय पितृलोकको प्राप्त हैं, उन यज्ञमें पूजनीय पितरोंकी सुन्दर बुद्धिमें तथा उनके कल्याणकारी मनमें हम स्थित रहें [अर्थात् उनकी मन-बुद्धिमें हमारे कल्याणकी भावना बनी रहे]।

आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

(यजु० १९। ५८)

इस मन्त्रका अर्थ पहले (पृष्ठ ९ में) आ चुका है।

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन्॥ (यजु० २। ३४)

हे जल! तुम स्वादिष्ठ अन्नके सारभूत रस, रोग—मृत्युको दूर करनेवाले घी और सब प्रकारका कष्ट मिटानेवाले दुग्धका वहन करते हो तथा सब ओर प्रवाहित होते हो, अतएव तुम पितरोंके लिये हविःस्वरूप हो; इसलिये मेरे पितरोंको तृप्त करो।

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरो-ऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ।

(यजु० १९ । ३६)

स्वधा (अन्न) के प्रति गमन करनेवाले पितरोंको स्वधा[1] संज्ञक अन्न प्राप्त हो, उन पितरोंको हमारा नमस्कार है। स्वधाके प्रति जानेवाले पितामहोंको स्वधा प्राप्त हो, उन्हें हमारा नमस्कार है। स्वधाके प्रति गमन करनेवाले प्रपितामहोंको स्वधा प्राप्त हो, उन्हें हमारा नमस्कार है। पितर पूर्ण आहार कर चुके, पितर आनन्दित हुए पितर तृप्त हुए। हे पितरो! अब आपलोग [आचमन आदि करके] शुद्ध हों।

ये चेह पितरो ये च नेह यांश्च विद्म याँ २ ॥ उ च न प्रविद्म। त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञ ꣳ सुकृतं जुषस्व ॥

(यजु० १९ । ६७)

जो पितर इस लोकमें वर्तमान हैं और जो इस लोकमें नहीं [किंतु पितृलोकमें विद्यमान] हैं तथा जिन पितरोंको हम जानते हैं और जिनको [स्मरण न होनेके कारण] नहीं जानते हैं, वे सभी पितर जितने हैं, उन सबको हे जातवेदा—अग्निदेव! तुम जानते हो। [पितरोंके निमित्त दी जानेवाली] स्वधाके द्वारा तुम इस श्रेष्ठ यज्ञका सेवन करो—इसे सफल बनाओ।

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥

(यजु० १३ । २७)

---

१. 'स्वधा वै पितृणामन्नम्' इति श्रुतेः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यज्ञकी इच्छा करनेवाले यजमानके लिये वायु मधु (पुष्परस-मकरन्द) को वर्षा करती है। बहनेवाली नदियाँ मधुके समान मधुर जलका स्रोत बहाती हैं। समस्त ओषधियाँ हमारे लिये मधुर-रससे युक्त हों।

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ (यजु० १३। २८)

हमारे रात-दिन सभी मधुमय हों। पिताके समान पालन करनेवाला द्युलोक हमारे लिये मधुमय-अमृतमय हो माताके समान पोषण करनेवाली पृथिवीकी धूलि हमारे लिये मधुमयी हो।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (यजु० १३। २९) ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।

वनस्पति और सूर्य भी हमारे लिये मधुमान् (मधुर रससे युक्त) हों। हमारी समस्त गौएँ माध्वी-मधुके समान दूध देनेवाली हों।

फिर नीचे लिखे मन्त्रका पाठमात्र करे--

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त। (यजु० २। ३२)

हे पितृगण! तुमसे सम्बन्ध रखनेवाली रसस्वरूप वसन्त-ऋतुको नमस्कार है शोषण करनेवाली ग्रीष्म-ऋतुको नमस्कार है, जीवनस्वरूप

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर्षा-ऋतुको नमस्कार है, स्वधारूप शरद्-ऋतुको नमस्कार है, प्राणियोंके लिये घोर प्रतीत होनेवाली हेमन्त-ऋतुको नमस्कार है, क्रोधस्वरूप शिशिर-ऋतुको नमस्कार है। [अर्थात् तुमसे सम्बन्ध रखनेवाली सभी ऋतुएँ तुम्हारी कृपासे सर्वथा अनुकूल होकर सबको लाभ पहुँचानेवाली हों।] हे[1]षड्ऋतुरूप पितरो! तुम हमें [साध्वी पत्नी और सत्पुत्र आदिसे युक्त] उत्तम गृह प्रदान करो। हे पितृगण! इन प्रस्तुत दातव्य वस्तुओंको हम तुम्हें अर्पण करते हैं, तुम्हारे लिये यह (सूत्ररूप) वस्त्र है, इसे धारण करो।

द्वितीयगोत्रतर्पण

इसके बाद द्वितीय गोत्र मातामह आदिका तर्पण करे, यहाँ भी पहलेकी ही भाँति निम्नलिखित वाक्योंको तीन-तीन बार पढ़कर तिलसहित जलकी तीन-तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थसे दे। यथा—

अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः॥३॥ अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥३॥ अस्मद्वृद्धप्रमातामहः (बूढ़े परनाना) अमुकशर्मा अमुकसगोत्र आदित्यरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥३॥ अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥३॥अस्मत्प्रमातामही

---

१. 'षड् वा ऋतवः पितरः' इति श्रुतेः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(परनानी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अस्मद्वृद्धप्रमातामही (बूढ़ी परनानी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ ३ ॥

पत्न्यादितर्पण

अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥१॥ अस्मत्सुतः (बेटा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥१॥ अस्मत्पितृव्यः (पिताके भाई) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३॥ अस्मन्मातुलः(मामा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३॥ अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥ ३ ॥ अस्मत्सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३॥ अस्मत्पितृभगिनी(बूआ) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ १ ॥ अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥१॥ अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहिन) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥१॥ अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहिन) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं मलं तस्यै स्वधा नमः ॥१॥ अस्मच्छ्वशुरः (श्वशुर) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३॥ अस्मद्गुरुः अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३॥ अस्मदाचार्यपत्नी अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥२॥ अस्मच्छिष्यः अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३॥ अस्मत्सखा अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥३॥ अस्मदाप्तपुरुषः अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥ ३ ॥

इसके बाद सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो नीचे लिखे श्लोकोंको पढ़ते हुए जल गिरावे—

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः ॥
जलेचरा भूनिलया वायव्याधाराश्च जन्तवः।
प्रीतिमेते प्रयान्त्वाशु मदत्तेनाम्बुनाखिलाः ॥
नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।
तेषामाप्यायनायैतदीयते सलिलं मया ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु ये चास्मत्तोयकाङ्क्षिणः ॥

देवता, असुर, यक्ष, नाग, गन्धर्व, राक्षस, पिशाच, गुह्यक, सिद्ध, कूष्माण्ड, वृक्षवर्ग, पक्षी, जलचर तथा थलचर जीव और वायुके आधारपर रहनेवाले जन्तु—ये सभी मेरे दिये हुए जलसे शीघ्र तृप्त हों। जो समस्त नरकों तथा वहाँकी यातनाओंमें पड़े-पड़े दुःख भोग रहे हैं, उनको पुष्ट तथा शान्त करनेकी इच्छासे मैं यह जल देता हूँ। जो मेरे बान्धव न रहे हों, जो इस जन्ममें बान्धव रहे हों अथवा किसी दूसरे जन्ममें मेरे बान्धव रहे हों, वे सब तथा इनके अतिरिक्त भी जो मुझसे जल पानेकी इच्छा रखते हों, वे भी मेरे दिये हुए जलसे तृप्त हों।

ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ।
आ ब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा ॥

ब्रह्माजीसे लेकर कीटोंतक जितने जीव हैं, वे तथा देवता, ऋषि, पितर, मनुष्य और माता, नाना आदि पितृगण—ये सभी तृप्त हों, मेरे कुलकी बीती हुई करोड़ों पीढ़ियोंमें उत्पन्न हुए जो-जो पितर ब्रह्मलोकपर्यन्त सात द्वीपोंके भीतर कहीं भी निवास करते हों, उनकी तृप्तिके लिये मेरा दिया हुआ यह तिलमिश्रित जल उन्हें प्राप्त हो। जो मेरे बान्धव न रहे हों, जो इस जन्ममें या किसी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दूसरे जन्ममें मेरे बान्धव रहे हों, वे सभी मेरे दिये हुए जलसे तृप्त हो जायँ।

वस्त्र-निष्पीडन[1]

तत्पश्चात् वस्त्रको चार आवृत्ति लपेटकर जलमें डुबावे और बाहर ले आकर निम्नाङ्कित मन्त्रको पढ़ते हुए अपसव्य-भावसे अपने बायें भागमें भूमिपर उस वस्त्रको निचोड़े। (पवित्रकको तर्पण किये हुए जलमें छोड़ दे। यदि घरमें किसी मृत पुरुषका वार्षिक श्राद्ध आदि कर्म हो तो वस्त्र-निष्पीडन नहीं करना चाहिये।) वस्त्र-निष्पीडनका मन्त्र यह है—

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

---

१. वस्त्र-निष्पीडनके विषयमें स्मृतियोंके वचन—

योगियाज्ञवल्क्यः—वस्त्रनिष्पीडितं तोयं स्नातस्योच्छिष्टभागिनः।
भागधेयं श्रुतिः प्राह तस्मान्निष्पीडयेत्स्थले॥

वस्त्र निचोड़नेसे जो जल निकलता है, वह स्नान करनेवाले पुरुषके उच्छिष्टभागी जीवोंका भाग है, ऐसा श्रुति कहती है। अतः उसे स्थलमें निचोड़ना चाहिये।

वृद्धयोगी—यावदेतानृषींश्चैव पितॄंश्चापि न तर्पयेत्।
तावन्न पीडयेद्वस्त्रं येन स्नातो भवेन्नरः॥

जबतक इन ऋषियों और पितरोंका तर्पण न कर ले, तबतक मनुष्य उस वस्त्रको न निचोड़े जिसे पहनकर उसने स्नान किया हो।

स्मृत्यन्तरे—वस्त्रं चतुर्गुणीकृत्य पीडयेच्च जलाद्बहिः।
वामप्रकोष्ठे निक्षिप्य द्विराचम्य शुचिर्भवेत्॥

वस्त्रको चार आवृत्ति लपेटकर उसे जलसे बाहर ले जाकर निचोड़े। फिर उसे बायीं कलाईपर रखकर दो बार आचमन करके पवित्र हो जाय।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भीष्मतर्पण

इसके बाद दक्षिणाभिमुख हो पितृतर्पणके समान ही जनेऊ अपसव्य करके हाथमें कुश धारण किये हुए ही बालब्रह्मचारी भक्त-प्रवर भीष्मके लिये पितृतीर्थसे तिलमिश्रित जलके द्वारा तर्पण करे।

उनके लिये तर्पणका मन्त्र निम्नाङ्कित श्लोक है—

वैयाघ्रपदगोत्राय साङ्कृतिप्रवराय च।
गङ्गापुत्राय भीष्माय प्रदास्येऽहं तिलोदकम्।
अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे॥

अर्घ्यदान

फिर शुद्ध जलसे आचमन करके प्राणायाम करे। तदनन्तर यज्ञोपवीत बायें कंधेपर करके एक पात्रमें शुद्ध जल भरकर उसके मध्यभागमें अनामिकासे षड्दल—कमल* बनाये और

* षड्दल—कमल

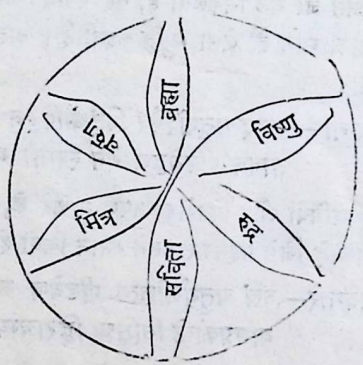

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उसमें श्वेत चन्दन, अक्षत, पुष्प तथा तुलसीदल छोड़ दे। फिर दूसरे पात्रमें चन्दनसे षड्दल-कमल बनाकर उसमें पूर्वादि दिशाके क्रमसे ब्रह्मादि देवताओंका आवाहन-पूजन करे तथा पहले पात्रके जलसे उन पूजित देवताओंके लिये अर्घ्य अर्पण करे। अर्घ्यदानके मन्त्र निम्नाङ्कित हैं—

ॐ ब्रह्म[1] जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ (यजु० १३। ३) ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणं पूजयामि॥

सर्वप्रथम पूर्व दिशासे प्रकट होनेवाले आदित्यरूप ब्रह्मने भूगोलके मध्यभागसे आरम्भ करके इन समस्त सुन्दर कान्तिवाले लोकोंको अपने प्रकाशसे व्यक्त किया है तथा वह अत्यन्त कमनीय आदित्य इस जगत्की निवासस्थानभूत अवकाशयुक्त दिशाओंको, विद्यमान—मूर्त्तपदार्थके स्थानोंको और अमूर्त्त वायु आदिके उत्पत्तिस्थानोंको भी प्रकाशित करता है।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाꣳ सुरे स्वाहा॥ (यजु० ५। १५) ॐ विष्णवे नमः। विष्णुं पूजयामि॥

सर्वव्यापी त्रिविक्रम (वामन) अवतारधारी भगवान् विष्णुने इस चराचर जगत्को विभक्त करके [चरणोंसे] आक्रान्त किया है। उन्होंने पृथ्वी, आकाश और द्युलोक—इन तीनों स्थानोंमें अपना चरण स्थापित किया है [अथवा उक्त तीनों स्थानोंमें वे क्रमशः अग्नि, वायु तथा सूर्यरूपसे स्थित हैं], इन विष्णु भगवान्के चरणमें

---

१. अत्र ब्रह्मशब्दोपादानाल्लिङ्गाद् ब्रह्मणः स्तवनम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समस्त विश्व अन्तर्भूत है। हम इनके निमित्त स्वाहा (हविष्यदान) करते हैं।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ (यजु० १६। १) ॐ रुद्राय नमः। रुद्रं पूजयामि॥

हे रुद्र! आपके क्रोध और बाणको नमस्कार है तथा आपकी दोनों भुजाओंको नमस्कार है।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ (यजु० ३६। ३) ॐ सवित्रे नमः। सवितारं पूजयामि॥

हम स्थावर-जङ्गमरूप सम्पूर्ण विश्वको उत्पन्न करनेवाले उन निरतिशय प्रकाशमय सूर्यस्वरूप परमेश्वरके भजने योग्य तेजका ध्यान करते हैं, जो कि हमारी बुद्धियोंको सत्कर्मोंकी ओर प्रेरित करते रहते हैं।

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥ (यजु० ११।६२) ॐ मित्राय नमः। मित्रं पूजयामि॥

मनुष्योंका पोषण करनेवाले दीप्तिमान् मित्रदेवताका यह रक्षण-कार्य सनातन, यशरूपसे प्रसिद्ध, विचित्र तथा श्रवण करनेके योग्य है।

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ (यजु० २१। १) ॐ वरुणाय नमः। वरुणं पूजयामि॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे संसार-सागरके अधिपति वरुणदेव ! अपनी रक्षाके लिये मैं आपको बुलाना चाहता हूँ, आप मेरे इस आवाहनको सुनिये और [यहाँ शीघ्र पधारकर] आज हमें सब प्रकारसे सुखी कीजिये।

सूर्योपस्थान

इसके बाद निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़कर सूर्योपस्थान (सूर्यको प्रणाम एवं प्रार्थना) करे—

ॐ अदृश्रमस्य केतवो विरश्मयो जनाँ २ अनु । भ्राजन्तो अग्नयो यथा । उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय । सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहम्मनुष्येषु भूयासम् (यजु० ८ । ४०) हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥ (यजु० १० । २४)

प्रज्ञाकी हेतुभूत एवं सम्पूर्ण पदार्थोंका ज्ञान करानेवाली इन सूर्यदेवकी किरणें समस्त प्राणियोंके भीतर विशेषरूपसे अनुगत (व्याप्त) देखी गयी हैं, जैसे देदीप्यमान अग्नि सर्वत्र व्याप्त देखी जाती है। हे सोम ! तुम उपयामपात्रद्वारा गृहीत हो, मैं दीप्तिमान् सूर्यदेवके निमित्त तुम्हें ग्रहण करता हूँ। यह तुम्हारा स्थान है, मैं दीप्तिशाली भगवान् सूर्यदेवके लिये तुम्हें इस स्थानपर रखता हूँ। हे अत्यन्त देदीप्यमान सूर्यदेव ! जिस प्रकार तुम सब देवताओंमें अत्यन्त प्रकाशमान हो, उसी प्रकार तुम्हारे प्रसादसे मैं भी मनुष्योंमें अत्यन्त प्रकाशमान होऊँ। (यजु० ८ । ४०) हे सूर्यभगवान् ! आप अहंकारका नाश करनेवाले (हंस), प्रकाशमें गमन करनेवाले (शुचिषत्), अपनेमें सबको निवासित करनेवाले (वसु), वायुरूपसे अन्तरिक्षमें गमन करनेवाले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(अन्तरिक्षसत्), देवोंको बुलानेवाले (होता), अग्निरूपसे वेदीपर स्थित होनेवाले (वेदिषत्), सबके पूजनीय (अतिथि), यज्ञशालामें आहवनीयादि अग्निरूपसे प्राप्त होनेवाले (दुरोणसत्), प्राणरूपसे मनुष्योंमें विचरनेवाले (नृषत्), श्रेष्ठ स्थानोंमें गमन करनेवाले (वरसत्), यज्ञमें प्राप्त होनेवाले (ऋतसत्) और आकाशमें विचरनेवाले (व्योमसत्) हैं तथा आप जलमें उत्पन्न होनेवाले (अब्जा), चार प्रकारके प्राणियोंके रूपमें पृथ्वीपर उत्पन्न होनेवाले (गोजा), सत्यसे उत्पन्न होनेवाले (ऋतजा), पर्वतोंमें उत्पन्न होनेवाले (अद्रिजा) एवं सत्यस्वरूप और महान् हैं। मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

इसके पश्चात् दिग्देवताओंको पूर्वादि क्रमसे नमस्कार करे—

'ॐ इन्द्राय नमः' प्राच्यै ॥ 'ॐ अग्नये नमः' आग्नेय्यै ॥
'ॐ यमाय नमः' दक्षिणायै ॥ 'ॐ निर्ऋतये नमः' नैर्ऋत्यै ॥
'ॐ वरुणाय नमः' पश्चिमायै ॥ 'ॐ वायवे नमः' वायव्यै ॥
'ॐ सोमाय नमः' उदीच्यै ॥ 'ॐ ईशानाय नमः' ऐशान्यै ॥
'ॐ ब्रह्मणे नमः' ऊर्ध्वायै ॥ 'ॐ अनन्ताय नमः' अधरायै ॥

इसके बाद जलमें नमस्कार करे—

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः।
ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः।
ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः।
ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

मुखमार्जन

फिर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर शुद्ध जलसे मुँह धो डाले—

ॐ संवर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा स ꣳ शिवेन।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् ॥

(यजु० २। २४)

हम ब्रह्मतेजसे, क्षीर आदि रससे, कर्म करनेमें समर्थ सुदृढ़ अङ्गोंसे और शान्त मनसे संयुक्त हों। सम्यक् प्रकारसे दान करनेवाले त्वष्टा देवता हमें धन दें और हमारे शरीरमें जो शक्ति आदिकी न्यूनता आ गयी है, उसका मार्जन करें [अर्थात् हमारे धन और शरीरकी पुष्टि करें]।

विसर्जन

निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़कर देवताओंका विसर्जन करे—

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित।
मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳस्वाहा वाते धाः ॥

(यजु० ८। २१)

हे यज्ञवेत्ता देवताओ! आपलोग हमारे इस तर्पणरूपी यज्ञको समाप्त जानकर अपने गन्तव्यमार्गको पधारें। हे चित्तके प्रवर्तक परमेश्वर! मैं इस यज्ञको आपके हाथमें अर्पण करता हूँ। आप इसे वायु देवतामें स्थापित करें।

समर्पण

निम्नाङ्कित वाक्य पढ़कर यह तर्पण-कर्म भगवान्‌को समर्पित करे—

अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् मम समस्तपितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु। ॐ विष्णवे नमः।

॥ इति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चबलिके मन्त्र

(१) गोबलि

निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़ते हुए सव्य भावसे ही गौओंके लिये बलि अर्पण करे—

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः ।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥
इदं गोभ्यो न मम ।

(२) कुक्कुरबलि

फिर यज्ञोपवीतको कण्ठमें मालाकी भाँति करके कुत्तोंके लिये ग्रास दे । मन्त्र यह है—

ॐ द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥
इदं श्वभ्यां न मम ।

(३) काकबलि

पुनः यज्ञोपवीतको अपसव्य करके नीचे लिखे मन्त्रको पढ़ते हुए कौओंके लिये भूमिपर ग्रास दे—

ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा ।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम् ॥
इदं वायसेभ्यो न मम ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(४) देवादिबलि

फिर सव्यभावसे निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़कर देवता आदिके लिये अन्न अर्पण करे—

ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसङ्घाः ।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम् ॥
इदमन्नं देवादिभ्यो न मम ।

(५) पिपीलिकादिबलि

इसी प्रकार निम्नाङ्कित मन्त्रसे चींटी आदिके लिये अन्न दे—

ॐ पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः ।
तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु ॥
इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम ।

मुद्रक—संसार प्रेस, काशीपुरा, वाराणसी—१
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

K. K. Sharma

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २ २ ८४
बुलन्दशहर (उ० प्र०)

मिलनेका पता

गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २ २ ८४
बुलन्दशहर (उ० प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection